



रामनवमी व्रत

रामायणरे काहनी अनुसारे, रामनवमीते राजा दशरथरे घरे भगवान राम जन्मग्रहण करहेलने । रावणके वध करार जन्म त्रतोयुगे रामरे जन्म हय । रामचन्द्रके श्री भगवान वसिष्ठुर सप्तम अवतार हसिबे देखा हय । चतैत्र मासरे शुक्ल पक्षरे प्रतपिद थकेके शुक्लपक्षरे नवमी तिथि पर्यन्त – एहि नवरात्ररि नवम दनिरे रामनवमी उदयापति हय । भगवान रामरे उल्लेखे ये शुधुमात्र प्राचीन हिन्दु ग्रन्थे पाओया याय. ता नय, जनै एवंग वौद्ध धर्म ग्रन्थे भगवान रामरे उल्लेखे आछे। प्रतिवहर एहि दनिटकिरे भगवान रामरे जन्म तिथि हसिबे पालन करा हय. भारत सह गोटा विश्वे। एहि राम नवमीते अशुभ शक्तकिरे पराजति करे शुभ शक्तकिरे आमन्त्रण जानान हय।

रामनवमी तिथिते भगवान रामचन्द्ररे जन्म-उत्सव पालन करा हय। हिन्दुधर्मरे वैष्णव सम्प्रदाय. ओ वैष्णव धर्मग्रन्थगुलतिरे येसेव जनप्रिय. देवतार कथा पाओया याय., तार अन्यतम हलने राम। सारा दक्षिण ओ दक्षिणपूर्व एशियाय. राम जनप्रिय. देवता। लोकवश्विवासानुसारे, रामरे जन्मस्थान हल भारतरे अयोध्या शहर।

एहि उत्सवरे दनिरे मन्द शक्तकिरे पराजति करे भालोर प्रतिष्ठा करा हय, अर्धमके

নক্ষিপে করে ধর্মের প্রতীষ্ঠা করা হয়। এই উৎসবের দিন সকালে হিন্দুদের আদি দেবতা সূর্য দেবকে জল প্রদান করে, সর্বোচ্চ ক্রমতার অধিকারী সূর্য দেবতার আশীর্বাদ গ্রহণ করা হয়। রাম নবমী উপলক্ষে ধার্মিক ব্যক্তির সমগ্র দিন জুড়ে বৈদিক মন্ত্র পাঠ করেন। কিছু বৈষ্ণব হিন্দু একটিনন্দরিতে যান যখন অন্যরা তাদের বাড়িতে প্রার্থনা করেন এবং কটে কটে পূজা এবং আরতরি অংশ হিসাবে সঙ্গীত সহ ভজন বা কীর্তনে অংশগ্রহণ করেন।

রাম নবমীতে মর্যাদার প্রতীষ্ঠা ভগবান রামের পূজা করলে খ্যাতি এবং সৌভাগ্য আসে। জীবনে সর্বদা সুখ এবং সমৃদ্ধি থাকে। ভগবান রামের উপাসনা করলে জীবনে ইতিবাচকতা বজায় থাকে এবং সমস্ত কাজ বিনা বাধায় সম্পন্ন হয়। রাম নবমী পালন করার মূল উদ্দেশ্য হল অধর্মকে বিনাশ করে ধর্মকে স্থাপন করা।

এ দিন নিষ্ঠা নিয়ে পূজা করলে মনের অনেকে আকাঙ্ক্ষা পূরণ হয়। ভগবানের কৃপায় সব ধরনের সংকট থেকে রক্ষা পাওয়া যায় এ দিন পূজা করলে। রামনবমীর দিন ভগবান রামের সঙ্গই দেবী দুর্গারও পূজা করেন। সক্ষেত্রে সব ধরনের বিপদ থেকে রক্ষা পাওয়া যায় বলেও বিশ্বাস করেন অনেকে।

এ বছর (2023) [বাংলার 1429 সাল] চৈত্র মাসের শুক্ল পক্ষের প্রতীপিদ শুরু হবে নবমী তিথি 21st March 2023 (মঙ্গলবার) রাত 10:53 মিনিট থেকে শুরু হবে কিন্তু 22nd March 2023 (বুধবার) সূর্য উদয়ের সঙ্গে শুক্ল পক্ষের প্রতীপিদ শুরু হবে। তাই 22nd March 2023 (বুধবার) থেকে নবরাত্রীর প্রথম দিন প্রতীপিদ শুরু ধরা হবে।

রামনবমী-নবরাত্রীর প্রথম দিন প্রতীপিদ 22nd March 2023 (বুধবার) থেকে শুরু ধরা হবে।

রামনবমী-নবরাত্রীর নবম দিন অর্থাৎ নবমী তিথি 30th March 2023 (বৃহস্পতিবার) রাত 11:31 পর্যন্ত থাকবে। তাই রামনবমী 30th March 2023 (বৃহস্পতিবার) পালতি হবে এবং রামপূজা, সীতাপূজা এবং হনুমান বান্ডা পতাকা পূজন করা হবে। রাম নবমীর দিন সারা দেশের রাম মন্দিরে ভগবান শ্রী রামের আরাধনা করা হয়।

রাম নবমীর দিন সমস্ত মনস্কামনা পূরণ করতে হনুমানজরি এবং হনুমান বান্ডা পতাকা পূজা করুন

2023 সালের রাম নবমীর সময়সূচী:

নবমী তিথি শুরু – 29th March 2023 (বুধবার) রাত 09:08 PM থেকে শুরু।

নবমী তিথি শেষ – 30th March 2023 (বৃহস্পতিবার) রাত 11:31 PM পর্যন্ত।

তারিখ : 30th March 2023 (বৃহস্পতিবার)

রামনবমী বিশেষ পূজা মুহুর্ত : 10:27 AM থেকে 12:54 PM. (সময়কাল = 02 ঘন্টা 27

মনিটি)

চতৈর নবরাত্ৰিৰি ৰাম নবমী, মন্ত্ৰ জপে কাটবে বাস্তুদোষ থেকে গ্ৰহদোষ

ৰাম নবমীৰ দিনি[30th March 2023(বৃহস্পতিবিাৰ)] শুভ মুহূৰ্ত্তে ভগবান ৰামকে ধ্যান কৰাৰ সময়., "শ্ৰী ৰামচন্দ্ৰ কৃপালু ভজমান হাৰান ভাবা দাৰুণম" এৰ প্ৰশংসায়. ভগবান শ্ৰীৰামৰে পূজা কৰুন। এতে আপনাৰ জীবনৰে সকল দুঃখ-কষ্ট দূৰ হয়.ে যায়।

ৰামনবমীৰ দিনি, শুভ সময়ে ৰাম ৰক্ষা স্তোত্ৰ পাঠ "চৰতিম্ ৰঘুনাথস্য শতকোটী প্ৰবষ্টিম্। একাইকাক্ষৰম পুনসান মহাপত পাঠ কৰুন.." পদ্ধতিগিতভাবে। এতে কৰে আপনাৰ জীবন থেকে সঙ্কট দূৰ হব.ে, আপনি সৰ্বদা সুখী থাকবনে।

হনুমান চালসিয়. শ্ৰী ৰামজৰি পৰম ভক্ত হনুমান জৰি প্ৰশংসা পাওয়া যায়। অতএব, আপনি যদি আপনাৰ মনৰে কোনও ইচ্ছা ৰখে ৰামনবমীতে হনুমান চালসি পাঠ কৰনে, তবে ভগবান ৰাম এবে ভক্ত হনুমান উভয়ৰে কৃপায়. আপনাৰ ইচ্ছা পূৰণ হয়।

যদি আপনাৰ জীবনে কোনও সংকট বা বিপৰ্যয়. আপনাকে ছেড়ে না যায়., তাহলে ৰামনবমীৰ দিনি ৰামায়ণ বা ৰামচৰতি মানস পাঠ কৰুন। এতে কৰে আপনাৰ জীবনৰে সকল ঝামলো দূৰ হয়.ে যাবে।

যদি আপনি চান যে আপনাৰ জীবনে মঙ্গল থাকুক, তাহলে এই দিনে "মঙ্গল ভবন অমঙ্গল হৰি দ্ৰভু সুদাসাৰথ আজৰি বহিাৰী" চটোপাই প্ৰয়োগ কৰে সুন্দৰকাণ্ড পাঠ কৰুন।

আপনাৰ বাড়তি যদি কোনও বাস্তু ত্ৰুটি থাকে তবে তা দূৰ কৰাৰ জন্য়, ৰাম নবমীৰ দিনি একটী পাত্ৰে গুঁগাজল ননি, তাৰপৰে ভগবান ৰামৰে ধ্যান কৰে, শ্ৰী ৰামৰে প্ৰতৰিক্ষা মন্ত্ৰ 'ওম শ্ৰীম হবনি ক্লেইন ৰামচন্দ্ৰায়. শ্ৰীম নমঃ'। 108 বার জপ কৰুন। এৰ পৰ পাত্ৰে ৰাখা জল বাড়ৰি চাৰদকি ছটিয়ে দিনি। এটি কৰলে আপনাৰ ঘৰে বাস্তু দোষ ও দৃষ্টিৰি ত্ৰুটি দূৰ হয়।

আপনি যদি আৰ্থিক সংকটৰে মধ্য দযি.ে যাচ্ছনে, তাহলে ৰাম নবমীৰ দিনি পদ্ধতিগিতভাবে ৰামাষ্টক পাঠ কৰুন। এতে কৰে অৰ্থ উপাৰ্জন হয়।

শ্ৰীৰাম নবমী ব্ৰত

ব্ৰতকথাঃ- একসময়. পদ্মযোনি ব্ৰহ্মাকে মহৰ্ষি সনক প্ৰশ্ন কৰছিলিনে ও জানতে চযেছিলিনে যে কীভাবে দশৰথ ও কৌশল্যা শ্ৰীৰামচন্দ্ৰৰে মতো পুত্ৰ লাভ কৰছিলিনে। উত্তৰে ব্ৰহ্মা বলছিলিনে যে মহাৰাজ দশৰথ ও কৌশল্যা দীৰ্ঘদিনি পুত্ৰাদি লাভ না কৰে বডি চিন্তিত ছিলিনে। তাঁরা দুজন.ে একসময়ে পুত্ৰ লাভৰে আশায়. ভগবান সদাশবিৰে আৰাধনা কৰনে। পুত্ৰশোক.ে কাতৰ এই দুজনৰে ভক্তিতে ভগবান সদাশবি খুব সন্তুষ্ট হয়.েছিলিনে এবে তাঁদৰে কাছে এসে তাঁদৰে কী কামনা তা জানতে চযেছিলিনে। উত্তৰে তাঁরা দুজন বলছিলিনে যে কী কৰলে তাঁরা পুত্ৰলাভ কৰতে পাৰবে তাৰ উপায়. তিনি বলছিলি। এই কথা শুন.ে ভগবান

সদাশৰি বলছেলিনে যে তাঁরা যদি পুত্ৰেষ্টি যজ্ঞ করে তাহলে স্বযং নারাষণকে সন্তান হিসাবে পাবনে। এই কথা শুনতে মহারাজ দশরথ পুত্ৰেষ্টি যজ্ঞ করলনে। তার কিছুদিনের মধ্যেই কৌশল্যা গর্ভবর্তী হলনে এবং সঠিক সময়ে শুভলগ্নে চৈত্র মাসের শুকলপক্বে, পুনর্বসু নক্শত্ৰে নবমী তথিতিতে স্বযং নারাষণ শ্ৰীৰামচন্দ্র রূপে জন্মগ্রহণ করলনে দশরথ গৃহে।"

এই কথা শোনার পর মহর্ষি সনক ব্রহ্মাকে এই ব্রতেরে ন্যিম জানতে চাইলে ব্রহ্মা বললনে যে ব্রত পালনেরে আগরে দিনি নারামষি খেয়ে সংযমী হয়ে তৃণ শয্যায় শয়ন করতে হয়। পরদিন সকালে উঠে স্নান করে শুদ্ধাচারে সংকল্প করে প্রথমে কৌশল্যা, তারপর দশরথ ও পরে রামচন্দ্রেরে পূজা করতে হয়। পাদ্য অর্থা দ্বিধি পূজা করে পুষ্পাঞ্জলি দ্বিধি দেদিনি অষ্টম প্রহরে অষ্টবধি পূজা করতে হয় এবং ব্রতকথা শুনতে রাত্রি অতিবাহতি করতে হয়। আবার পরদিন সকালে স্নান করে বধিমিত্তো শ্ৰীৰামচন্দ্রেরে পূজা করতে হয় এবং ব্রাহ্মণকে দক্ষিণা দ্বিধি খাওয়াতে হয়। তারপর নিজি পারণ করে ব্রত শেষে করতে হয়। এই ব্রতকথা শুনলে রোগী রোগমুক্ত হয়, দরদির ধনবান এবং পুত্ৰহীনা পুত্ৰবর্তী হয়। ওই শ্ৰীৰামনবমীর দিনি রামচন্দ্রকে প্রণাম করে যেকোন কাজ করলে সুফল মলে। এই তথিতিতে উপোস করে রাত্রি জগে ও তর্পন করলে ব্রহ্মলোক প্রাপ্তি ঘটে। রামচন্দ্রকে উদ্দেশ্য করে ইস্টমন্ত্র জপ করতে মন্ত্রেরে পুনঃশ্চরণ হয়। দশমীর দিনি ব্রাহ্মণদেরে যাওয়াতে ও দক্ষিণা দিতে হয়।

ব্রতফলঃ- এই ব্রতপালনে শ্ৰীৰামচন্দ্র সন্তুষ্ট হয়ে ব্রতীর মনবাসনা পূরণ করনে। এই ব্রত পালন করলে দুর্বসিহ গর্ভযন্ত্রণা ভোগ করতে হয় না। এই রামনবমীর দিনি রামচন্দ্রকে স্মরণ করে যে কাজ করা হয় তা সর্বাঙ্গীন সুসম্পন্ন সফল হয়ে থাকে। এই ব্রতটি অতি পুণা একটি ব্রত। এই ব্রত পালনে মহাপুণ্যি হয়।

শ্ৰীৰামকবচম্

ওঁ ধ্যাত্বা নীলোৎপলশ্যামং রামং রাজীবলোচনম্। জানকীলক্ষ্মণোপতেং জটামুকুটমণ্ডতিম্
॥ ১ ॥ শাস্তিগুণধনুর্বাণ পাণিং নক্তঞ্চারান্তকম্। স্বলীলয়া জগৎ ত্রাতুমাবরিভূতমজং বভিম্।
রামরক্ষাং পঠেৎ প্রাজ্ঞঃ পাপঘনীং সর্ব্বকামদম্ ॥ ১ ॥

অস্য শ্ৰীৰাম বচস্য বুদ্ধকৌশিকি ঋষিগায়ত্রীচ্ছন্দঃ শ্ৰীৰামচন্দ্রো দেবতা
শ্ৰীৰামচন্দ্রপ্ৰীত্যর্থং জপে বনিয়োগঃ ॥ ওঁ শরিতো মৈ রাঘবঃ পাতুঃ ভালং দশরথাত্মজঃ।
কৌশল্যযেযো দৃশটৌ পাতু বশ্বামিত্রপ্রযিঃ শ্ৰুতী ॥ ২ ॥

ঘ্রাণং পাতু মখত্রাতা মুখং সটামিত্রবিৎসলঃ। জিহ্বাং বদ্যানখি পাতু কণ্ঠং ভরত বন্দতিঃ ॥
৩ ॥ স্কন্ধটৌ দ্বিয যুধঃ পাতু ভুজটৌ ভগ্নশেকারম্মকঃ। করটৌ সীতাপতিঃ পাতু হৃদয়ং
জামদগ্নজিৎ ॥ ৪ ॥

বক্ষঃ পাতু কবন্ধারিস্তনটৌ গীৰ্ব্বাণবন্দতিঃ। পার্শ্বটৌ কুলপতিঃ পাতু কুক্ষমিক্ষিকাকুনন্দনঃ
॥ ৫ ॥ মধ্যং পাতু খরধ্বংসী নাভিং জাম্ববদাশ্রয়ঃ। গুহ্যং জতিনেদ্রযিঃ পাতু পৃষ্ঠং পাতু

रघुत्तमः ॥ ७ ॥

सुग्रीवशेः कटिं पातु सखिनि हनुमप्रभु। उरु रघुत्तमः पातु रक्षःकुलवनिाशकृ९ ॥१॥ जानुनी
सतेुकृ९ पातु जङ्घदशेमखास्तकः। पादौ बडिीषणः श्रीदः पातु रामोहखलिं वपुः ॥८॥

एतां रामबलोपतें रक्षां यः सुकृती पठे। स चरियाः सुखी पुत्री वजियी वनियी भवे ॥९॥
पाताल भूतलव्यामचारणि छद्मचारणिः। न द्रुष्टुमपि शक्तस्ते रक्षतिं रामनामभिः ॥ १० ॥

रामतेरि रामभद्रतेरि रामचन्द्रतेरि वा स्मरन। नरो न लपियते पापैरैतुक्तं मुक्तकि वनिदति
॥ ११ ॥ जगज्जैरैक मन्त्रेण रामनाम्नाभि रक्षतिम्। यः करे धारयेते तस्य ० करस्थाः
सर्वसद्धिः ॥ १२ ॥

भूर्जपत्रे त्रिमां वदियां गन्धचन्दनचर्चुत्तिम्। कृत्वा वतै धारयेद् यस्तु सोहडिीष्टं
फलमापुयां ॥ १३ ॥ काकवन्ध्या च या नारी मृतापत्या च या भवे। वहवपत्या जीववसा सा
भवनेत्र संशयः ॥ १४ ॥

वज्रपञ्जरनामदेयं ये रामकवचं पठे। अव्याहताङ्गः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥१५॥
आडिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिां हरिः। तथा लिखित्वान् प्रातः प्रवुद्धो बुधकौशिकिः
॥ १६ ॥

धन्विणौ वद्धनसिं त्रिंशौ काकपक्षधरौ शुभौ। वीरौ मां पथरिक्षडोः तावुभौ
रामलक्ष्मणौ ॥ १७ ॥ तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ। पुण्डरीक वशिालाक्षौ
डीरक्षणाजनिम्बरौ ॥ १८ ॥

फलमूलाशनिौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारणिौ, पुत्रौ दशरथस्यतेौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ
॥१९॥ शरण्यौ सर्ववसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्ववधनुत्थताम्। रक्षःकुलनहिस्ता रौ त्रायतोः
वो रघुपुत्रौ ॥ २० ॥

आत्सज्य धनुयावसिु स्पृशवक्ष्या शुगणयिङ्ग सङ्गनिौ। रक्षाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि
यदवै गच्छताम् ॥ २१ ॥ सन्नद्धः कवची खड्गी चापवाणधरो युवा। यच्छन मनोरथं चास्मान् रामः
पातु सलक्ष्मणः ॥ २२ ॥

अग्रतत्त्व नृसिंहो मे पृष्ठतो गरुडध्वजः। पार्श्वयोस्त धनुष्मन्तौ सशरौ
रामलक्ष्मणौ ॥ २३ ॥ रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो वली। काकुत्स्थः पुरुषः पूरणः
कौशल्येयो रघुत्तमः ॥ २४ ॥

वदोस्तवदेयो यज्जेशः पुराणः पुरुषोत्तमः। जानकीवल्लभः श्रीमान्प्रमयेपरक्रमः ॥ २५ ॥

॥ दक्षिणे लक्ष्मणे धन्वी वामे च जानकी शुभा। पुरतो मारुतरिषस्य तं नमामि रघुत्तमम् ॥
२६ ॥

आपदामपहतत्रं दातारं सर्व्वसम्पदाम्। गुणाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ २७ ॥
एतान्मिमांसां नामानि मन्त्रोक्तो यः सदा पठेत्। अश्वामधोयुतं पुण्यं स प्राप्नोति संशयः ॥
२८ ॥

रामचन्द्ररे ध्यान मन्त्र :

ॐ कोमलाङ्गं विशालाक्ष-मन्दिबनील-सम्प्रभं। दक्षिणांशे दशरथं
पुत्रावष्टन-तत्परं।

पृष्ठतो लक्षणं दवे सच्छत्रं कनकप्रभं ॥

पार्श्वे भरतशत्रुघ्नौ तालवृन्त-कराबुधौ।

अग्रे व्यग्रं हनुमन्तं रामानुग्रहकाङ्क्षिणम् ॥

पूजामन्त्रं श्रीरामचन्द्राय नमः। बीजमन्त्रं ॐ राम।

श्रीरामचन्द्ररे प्रणामः-ॐ रामाय रामचन्द्राय

रामभद्राय वधेसो रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये

नमः॥

रामनवमीर माहात्म्य

रामनवमीर दनि एइ काजगुलो करे नजिरे सौभाग्य वृद्धि करुनः-----

1. এই দিনি রাম সীতা এবং হনুমানজী একসঙ্গে রয়ছে এমন একটি ছবি বা মূর্তি স্থাপন করুন এবং তাতে কমলা রঙের সাদি়র ও লাল বা কমলা রঙের ওড়না অর্পণ করুন। যদি বাড়িতে সম্ভব না হয় তা হলে কোনও মন্দিরে গিয়েও এই কাজটি করতে পারেন।
2. এই দিনি কমলা রঙের সাদি়র দান করতে হবে। লাল রঙের সাদি়র নয়।
3. কয়কেটি কলাইয়ের ডালরে সঙ্গে অল্প দই এবং সাদি়র মাখিয়ে ননি। তার পর সগেলো অশ্বত্থ গাছরে গোড়ায় সন্ধ্যাবলো চুপচাপ রখে আসুন। রাখার পর পছিন ফরিরে আর দেখবেন না।
4. এই দিনি 9 জন কুমারীকে নজিরে বাড়িতে খাওয়ান। খাওয়ানোর সময় তাঁদেরে পছন্দ মতো কিছু জনিসি দান করুন।
5. এই দিনি একটি পতিলরে খালায় মাটির ন'টি গাওয়া ঘয়িরে প্রদীপ ঘরে জ্বলে রাখুন। যত ক্ষণ পর্যন্ত প্রদীপগুলো নজিরে থেকে না নভিরে যায় তত ক্ষণ জ্বলতে দিনি। এর ফলে বাড়িতে ধন সম্পদ বৃদ্ধি পায়।
6. এই দিনি লাল কাপড়ে 11টি কড়ি কালো সুতো দিয়ে বঁধে আলমারিতে রখে দিনি।
7. এই দিনি অবশ্যই পশু পাখদিরে খাবার খাওয়ান।
8. 11টি অশ্বত্থ পাতা ভাল করে গঞ্জাজলে ধুয়ে পাতার ওপর সাদি়র দিয়ে 'শ্রীরাম' লখিরে ভগবান শ্রীরামচন্দ্ররে চরণে নবিদেন করুন।

